जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

सम्यग्दर्शन, ज्ञानप्रधान चारित्र ही धर्म है और साम्य भावरूप वीतराग चारित्र से परिणत आत्मा ही धर्मात्मा है। ह्न आ. कुन्दकुन्द और उनके पंच परमागम, पृष्ठ - 56

वर्ष : 27, अंक : 21 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये
फरवरी (प्रथम)2005 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पं. संजीवकुमार गोधा व पं. जितेन्द्र वि. राठी | वार्षिक शुल्क : 25 रु., एक प्रति : 2/-

पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का सार्वजनिक अभिनन्दन एवं अभिनन्दन ग्रन्थ 'रतनदीप' का लोकार्पण

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के प्राचार्य, विशिष्ट मनीषा के धनी, अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह रविवार, दिनांक 16 जनवरी, 05 को सायंकाल सी-स्कीम स्थित श्री महावीर दि. जैन उच्च माध्यमिक विद्यालय, जयपुर में आयोजित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता जयपुर के महापौर श्री अशोक परनामी ने की। मुख्य अतिथि राजस्थान उच्च न्यायालय के न्यायाधिपति श्री नरेन्द्रकुमार जैन थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में शिक्षा राज्यमंत्री-राजस्थान सरकार श्री वासुदेव देवनानी, महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक बड़जात्या, पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशक डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, पूर्व सांसद श्री डालचन्द जैन सागर, वरिष्ठ पत्रकार श्री मिलापचन्द डंडिया, श्री अखिल बंसल आदि मंचासीन थे।

समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री वासुदेव देवनानी ने अपने उद्बोधन में कहा की 25 वर्षों से महाविद्यालय के संचालन के माध्यम से भारिल्लजी ने राजस्थान प्रदेश की उन्नति, भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत के विकास में जो योगदान दिया है, उसके लिये राजस्थान प्रदेश उनका सदैव ऋणी रहेगा।

मूड़बिद्री के भट्टारक पण्डिताचार्य स्वस्ति श्री चारूकीर्तिजी का मंगल संदेश लेकर दिल्ली से पधारे डॉ. जयकुमार उपाध्ये ने सभा को उनका आशीर्वचन पढ़कर सुनाया तथा माल्यार्पण एवं साफा पहनाकर अभिनन्दन किया।

मंचासीन बाएं से अखिल बंसल, अशोक बड़जात्या, शिक्षाराज्य मंत्री वासुदेव देवनानी, न्यायमूर्ति एन.के. जैन, पं. रतनचन्द भारिल्ल, महापौर अशोक परनामी, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल एवं मिलापचन्द डंडिया

पूर्व सांसद श्री डालचन्दजी जैन ने अपने स्वागत भाषण में पण्डित रतनचन्दजी के व्यक्तित्त्व और कर्तृत्व पर प्रकाश डालते हुये उन्हें मानव समाज की अमूल्य निधि बताया ।

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल ने अपने भ्राता के साथ बिताये गये जीवन के 70 वर्षों के महत्त्वपूर्ण संस्मरणों को सुनाते हुये सभा को मंत्रमुग्ध कर दिया। आपने कहा कि ये मेरे बड़े भाई जरूर हैं, पर लौकिक बड़े भाई की तरह नहीं, हम भाई तो कम सहृदय सखा अधिक हैं।

इनके अतिरिक्त महापौर श्री अशोक परनामी, न्यायमूर्ति एन.के जैन, डॉ. विद्यानन्द जैन विदिशा, श्री अशोक बड़जात्या इन्दौर, प्रसिद्ध शिक्षाविद् 96 वर्षीय श्री तेजकरण डंडिया जयपुर, ब्र. जतीशचन्द शास्त्री सनावद, ब्र. अभिनन्दनकुमार शास्त्री खनियांधाना, डॉ. शीतलचन्द जैन एवं श्री अखिल बंसल ने भी सभा को संबोधित किया।

श्री प्रेमचन्द बजाज द्वारा तिलक, श्री अभिनन्दनप्रसाद सहारनपुर, श्री आदीश जैन दिल्ली द्वारा माल्यार्पण, श्री प्रदीपकुमार चौधरी किशनगढ़ द्वारा रजत श्रीफल एवं श्री महीपाल जैन बांसवाड़ा द्वारा शॉल भेंटकर पण्डितजी का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया; तत्पश्चात् अशोक बड़जात्या ने माननीय एन.के. जैन से अभिनन्दन ग्रन्थ रतनदीप का लोकार्पण कराया। एवं उसकी प्रथम प्रति पण्डित रतनचन्दजी को भेंट की।

इसीप्रसंग पर पण्डितजी की धर्मपत्नी श्रीमती कमलाजी भारिल्ल का अभिनन्दन श्रीमती परनामी एवं श्रीमती सुशीला डंडिया ने किया।

लोकार्पण के पूर्व श्री अखिल बंसल ने ग्रन्थ

(शेष पृष्ठ 8 पर ...)

साधना चैनल पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 6:45 बजे अवश्य सुनें।
साधना चैनल आपके यहाँ न आता हो तो श्री पंकज जैन (साधना चैनल) से 09312506419 नम्बर पर सम्पर्क करें।

सम्पादकीय –

पञ्चास्तिकाय परिशीलन

23 ह्न रतनचन्द भारिल्ल

विगत ३५वीं गाथा में सिद्ध भगवान के स्वरूप का कथन किया गया है।

गाथा–३६

ण कुदोचि वि उप्पण्णो जम्हा कज्जं ण तेण सो सिद्धो।
उप्पादेदि ण किंचि वि कारणमवि तेण ण स होदि।।

(हरिगीत)

अन्य से उत्पाद नहिं इसलिए सिद्ध न कार्य हैं।
होते नहीं हैं कार्य उनसे अत: कारण भी नहीं।।

प्रस्तुत ३६वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्ददेव कहते हैं कि ह्न वे सिद्ध भगवान किसी अन्यकारण से उत्पन्न नहीं होते; इसलिए किसी के कार्य नहीं हैं और किसी अन्य कार्य को उत्पन्न नहीं करते; इसलिए किसी अन्य के कारण भी नहीं हैं।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र मूल गाथा के भाव को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि ''सिद्धों में परद्रव्य के कारण व कार्यपना नहीं है; क्योंकि उनके द्रव्यकर्मों व भावकर्मों का क्षय हो चुका है। जिसप्रकार संसारी जीव कारणभूत भावकर्मरूप आत्मपरिणाम संतति और द्रव्यकर्मरूप पुद्गल परिणाम संतति के द्वारा देव–मनुष्य–तिर्यंच और नारक के रूप में कार्यभूत रूप से उत्पन्न होता है, सिद्धरूप में वही जीव वैसे उत्पन्न नहीं होता; क्योंकि उसके दोनों कर्मों का अभाव हो गया है।''

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेवश्री कहते हैं कि जैसा कारण होता है, वैसा ही कार्य होता है। संसारी जीवों को कर्म–नोकर्म कारण होते हैं; किन्तु वैसा कार्य–कारणभाव सिद्धों को नहीं होता। सिद्ध जीव किसी परवस्तु से उत्पन्न नहीं होता। सिद्धदशा कर्म के अभाव से नहीं होती, अपने पुरुषार्थ से होती है। सिद्धत्व कर्मों अथवा नोकर्मों का कार्य नहीं है। सिद्धदशा होने में कर्म तथा नोकर्म निमित्त के रूप में भी नहीं है। यदि कर्मों के अभाव के कारण सिद्ध हुए ह्न ऐसा माने तो सिद्ध तो सादि–अनन्त काल तक टिकते हैं, वहाँ जो अनन्तकाल तक उस सिद्धदशारूप परिणमित होते हैं। उस परिणमन में कारण किसे कहोगे।

''देखो ! सिद्धपद किसी बाह्य कारण का कार्य नहीं है; किन्तु द्रव्यस्वभाव त्रिकाल चिदानन्द कारणपरमात्मा है, उसका कार्य सिद्धपद है।''

संसारी जीव भी अपनी भूल से ही अज्ञान–राग–द्वेष करता है और उसका कार्य चार गति है, द्रव्यकर्म–भावकर्म तो उमसें निमित्तमात्र हैं, किन्तु ऐसा निमित्त–नैमित्तिक संबंध भी संसारदशा में है, सिद्धदशा में तो ऐसा कोई निमित्त–नैमित्तिक संबंध भी नहीं है।

संसारदशा में भी ऐसा नहीं होता कि पहले निमित्तरूप कर्म हो और बाद में नैमित्तिक रागादि, यहाँ भी दोनों का काल एक है। एक समय का स्वतंत्र स्वयंसिद्ध सुमेल है।

संसारी जीव अनादिकाल से पुद्गल कर्म के संबंधरूप कारण से मिथ्यात्व रागादिरूप परिणमित होता है, वह स्वयं के विपरीत पुरुषार्थ से है, कर्म तो उसमें निमित्तमात्र है। ऐसा निमित्त–नैमित्तिक संबंध संसारदशा में है, सिद्धदशा में नहीं है।

कर्म से विकार होना माननेवाला मिथ्यादृष्टि है; किन्तु मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और योग का कंपन स्वयंसिद्ध अपने से–जीव से होते हैं। वे निश्चय से जीव में होते हैं ह्न ऐसा जाने तो व्यवहार से कर्म कारण कहा जाता है।

निश्चय से शरीर की रचना शरीर के परमाणुओं के कारण होती है और रागी जीव का राग व्यवहार से कारण है। यह बात व्यवहार से पर्याय अपेक्षा सत्य है; परन्तु इससे कोई परस्पर पराधीनता मान ले तो वह मिथ्यादृष्टि है।

यदि निमित्त के बिना विकार होता हो तो वह स्वभाव जो जाए; परन्तु जीव में विकारभाव की योग्यता है; इसलिए विकार होता है और उससमय सामने कर्म निमित्तरूप होता है।

जिनको परमानंद भूतार्थ स्वभाव का पूर्ण आश्रय है ह्न ऐसे सिद्धभगवान अपने परिपूर्ण परमानंद को उत्पन्न करते हैं। वे किसी काल में संसारभाव को उत्पन्न नहीं करते। वे सदा अपने शुद्ध स्वरूप को ही उत्पन्न करते हैं, अन्य कुछ उत्पन्न नहीं करते।

गाथा–३७

सस्सदमध उच्छेदं भव्वमभव्वं च सुण्णमिदरं च।
विण्णाणमविण्णाणं ण वि जुज्जदि असदि सब्भावे।।

(हरिगीत)

सद्भाव हो न मुक्ति में तो ध्रुव–अध्रुवता न घटे।
विज्ञान का सद्भाव अर अज्ञान असत् कैसे बने ?

यदि मोक्ष में जीव का सद्भाव न हो तो जीव का शाश्वतपना और नाशवत्पना अर्थात् जीव की ध्रुवता व अध्रुवता ही घटित नहीं होगी तथा विज्ञान व अविज्ञान आदि कुछ भी व्यवस्था नहीं बन सकेगी तथा भव्य–अभव्यपने का व्यवहार भी संभव नहीं होगा; इसलिए यह सिद्ध है कि मोक्ष में जीव का सद्भाव है।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि ह्न यहाँ जो व्यक्ति जीव के अभाव को मुक्ति कहते हैं, उनकी मान्यता का खंडन किया है।

१. भगवान आत्मा द्रव्यरूप से त्रिकाल शाश्वत है, मुक्ति में भी उसका सद्भाव है।

२. शाश्वत-नित्य द्रव्य में प्रतिसमय पर्याय पलटती है। एक पर्याय नष्ट होती है, दूसरी उत्पन्न होती है । द्रव्य रूप से वस्तु दोनों अवस्थाओं में वही रहती है।

३. द्रव्य सर्वदा अभूत पर्यायोंरूप से भाव्य है, होने योग्य है।

४. द्रव्य सर्वदा भूतपर्यायपने अभाव्य अर्थात् न होने योग्य है।

५. द्रव्य अन्य द्रव्यों से सदा शून्य है अर्थात् एक द्रव्य में दूसरे द्रव्य का सर्वथा अभाव है।

६. द्रव्य स्वद्रव्य से सदा अशून्य है।

७. किसी द्रव्य में अनन्त ज्ञान है और किसी में सान्त ज्ञान है।

८. किसी में अनन्त अज्ञान और किसी में सान्त अज्ञान है।

यह सब अन्यथा घटित न होने से मोक्ष में जीव के सद्भाव को प्रगट करता है।

आचार्य जयसेन इसी गाथा की टीका करते हुए कहते हैं कि ह्न सिद्ध अवस्था में जीव टंकोत्कीर्ण ज्ञायकरूप द्रव्य की अपेक्षा अविनश्वर होने से शाश्वत स्वरूप है तथा पर्यायरूप से अगुरुलघुकगुण की षट्स्थानगत हानि-वृद्धि की अपेक्षा उच्छेद रूप है। निर्विकार चिदानन्द एक स्वभावमय परिणाम से होना-परिणमना भव्यत्व है। अतीत (नष्ट) हो गये मिथ्यात्व-रागादि विभाव परिणाम से नहीं होना परिणमना अभव्यत्व है। स्व-शुद्धात्म द्रव्य से विलक्षण परद्रव्य-क्षेत्र-काल-भावरूप परचतुष्टय से नास्तित्व है, शून्यता है। निज परमात्मा संबंधी स्वद्रव्य, स्वक्षेत्र, स्वकाल भावरूप से इतर अर्थात् अशून्यता है। समस्त द्रव्य-गुण-पर्यायों को एक समय में प्रकाशित करने में समर्थ सकल-विमल केवलज्ञान से विज्ञान है, नष्ट हुए मतिज्ञानादि छद्मस्थ ज्ञान द्वारा परिज्ञान रहित हो जाने के कारण अविज्ञान है।

मोक्ष में जीव का सद्भाव विद्यमान न होने पर नित्यत्व आदि आठ गुण-स्वभाव घटित नहीं हो सकते हैं। उनके अस्तित्व से ही मोक्ष में जीव का सद्भाव जाना जाता है।

इसप्रकार भट्ट और चार्वाक मतानुसारी शिष्य के संदेह का नाश करने के लिए जीव के अभूतत्व स्वभाव को बताया है।

इस गाथा एवं टीका के भाव को कवि हीरानन्दजी निम्नांकित छन्दों में इसप्रकार कहते हैं ह्न

(सवैया इकतीसा)

दरव निजरूपतैं सासुता सदीव लसै,
परजै अनेक प्रतिसमै समै छेदिए।
सदा भूत परजैसों भाव्य नाम पावै सदा,
परजै अभूतसौं अभाव्य नाम वेदिए।।
परकै सरूप सुन्न अपने असुन्न जीव,
कहूँ है अनन्तग्यान कहूँ सांत खेदिए।
कहूँ स्वल्प नल्प कहूँ सान्त औ अजान कहूँ,
ऐसा सब भेद एक जीव सत्ता भेदिए।।200।।

(चौपई)

विविध भेद जामें नित पावै, विधि निषेध सब भेद कहावै।
सो सतभाव अभाव न करई, तीन काल आपनपौ धरई।।
तातैं सिद्धविषैं सो सत है, सबै भेद कहवति सो हत हैं।
भव्यजीवको अनुभवलायक, सिद्धसरूप सदा अनुभायक।।

छन्दों का सामान्य अर्थ यह है कि द्रव्य निज स्वरूप से सदैव शाश्वत शोभायमान होता है तथा पर्याय दृष्टि से प्रतिसमय नष्ट एवं उत्पन्न होता है। होनेवाली पर्याय की अपेक्षा भव्य एवं न होनेवाली पर्यायों की अपेक्षा उसे अभव्य कहते हैं। पर में स्व की नास्ति की अपेक्षा शून्य और अपने स्वरूप में वही जीव अशून्य है। जीव किसी अपेक्षा अनन्त ज्ञानवान है और किसी अपेक्षा सान्त है। किसी अपेक्षा अल्प और किसी अपेक्षा अनल्प है। किसी अपेक्षा भव्य और किसी अपेक्षा अभव्य है। जीव की सत्ता में यह सब भेद और अभेद है।

(क्रमशः)

शिविर एवं वर्षगांठ सम्पन्न

पौन्नूरमलै (त.ना) : आचार्य कुन्दकुन्द जैन संस्कृति सैन्टर, पौन्नूरमलै में जिनमंदिर स्थापना की प्रथम वर्षगांठ पर दिनांक २७ दिसम्बर से २ जनवरी, २००५ तक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया। इस अवसर पर ब्र. हेमन्तभाई गाँधी के नाटक समयसार, ग्यारह प्रतिमाओं पर तथा श्री पवनकुमारजी अलीगढ़ के मोक्षमार्गप्रकाशक एवं पण्डित राजेन्द्रजी पाटील, एलिमुन्नोली द्वारा छहढाला पर मार्मिक प्रवचन हुये।

प्रतिदिन प्रातः पूज्य गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन होते थे तथा वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव की सी.डी. भी दिखाई गई। शिविर का संचालन श्री मुकेश जैन देवलाली द्वारा किया गया। **ह्न श्रीमन्त नेज**

शिविर सानन्द सम्पन्न

बीकानेर (राज.) : यहाँ भगवान महावीर दि. जैन विद्वत् समिति के निर्देशन में दिनांक २५ से ३० दिसम्बर, २००४ तक शीतकालीन अवकाश में धार्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में पण्डित विकास जैन लाडनूं एवं पण्डित नीरज शास्त्री लाडनूं द्वारा बालबोध पाठमाला भाग-१, छहढाला, भक्तामर आदि विषयों की शिक्षण कक्षाओं एवं जिनेन्द्र पूजन प्रशिक्षण का संचालन किया गया।

शिविर में डॉ. मधुसुदन जैन, सुबोध जैन एवं नवनीत जैन का सहयोग मिला। शिविर में महावीर बाल मण्डल का गठन हुआ। **- अरविन्द जैन**

कहानी –

मान से मुक्ति की ओर

माया (धन) तेरे तीन नाम, परसा–परसू–परस राम। कहावत को चरितार्थ करते हुए जिनुआ बनिया को जिनुआ से जिन्नूजी और जिन्नूजी से जिनचन्द्र बने अभी चन्द दिन ही हुए थे; परन्तु वह बहुत जल्दी अपनी (जिनुआ वाली) औकात (हैसियत) भूल गया था।

जब सारा गाँव उसे जिनुआ कहकर पुकारता था, गाँव में कोई इज्जत नहीं थी। घर में दो चना और दो धना भी नहीं थे। भूखों मरता था, भरपेट खाने को भी नहीं मिलता था। नंगे पैर गाँव के गलियारों में घूम–घूमकर चने–भूंगड़े बेचकर जैसे–तैसे रोजी–रोटी चलाता था।

पर **सब दिन जात न एक समान** सिद्धान्त के अनुसार उसके भाग्य ने भी पलटी मारी, उसके दिन फिर गये और वह जिनुआ से जिन्नूजी बन गया।

सर्वे गुणा: कांचनमाश्रयन्ति ज्यों–ज्यों उसके पास सम्पत्ति बढ़ती गई, उसका कद ऊँचा होता गया, कद के साथ पद भी बढ़ता गया।

जो कलतक दुनिया की दृष्टि में बुद्धू था, कुछ नहीं समझता था। समाज की नजरों में मूर्खों का सरदार दिखता था। अब वही जिन्नूजी समाजभूषण, जैनरत्न **सेठ जिनचन्द्र** कहलाने लगे।

यद्यपि अभी भी उसके पास अभिमान करने लायक कुछ भी नहीं था; परन्तु **निरुत्पादपे देशे एरण्डोऽपि द्रुमायते** जिस भाँति वृक्षविहीन प्रदेश में एरण्ड का पौधा भी वृक्ष कहलाता है, उसी भाँति सेठ जिनचन्द्र की स्थिति थी।

एक रिश्तेदार (सेठ) की पूँजी के सहयोग से साहूकारी करके अर्थात् गाँव में किसानों को तगड़े ब्याज पर रुपया देकर तथा खेतों में बोने को दिए गए बीज की डेढ़ गुनी वसूली से कुछ ही दिनों में वह जिन्नू उस जनपद का सेठ बन गया।

आर्थिक स्थिति अच्छी हो जाने से उसने उस सुख–सुविधाविहीन छोटे से गाँव में अपने घर में कुछ सुविधायें जुटा ली थीं। जैसे कि पानी के लिए आँगन में नलकूप लगा लिया, नहाने–धोने, नित्यकर्मों से निबटने के लिए स्नानघर आदि बनवा लिया। प्रकाश के लिए जनरेटर, गेसबत्ती की व्यवस्था कर ली, कच्चे मकान की मरम्मत करा ली, सवारी के लिए घोड़ा–गाड़ी रख ली।

इसप्रकार उसने गाँव के गरीब व्यक्तियों से कुछ अलग दिखने के साधन क्या जुटा लिए, बन गये **अंधों में काने राजा**। फिर क्या था अब तो उसकी चाल ही बदल गई। सीधा चलता ही नहीं था, उसका बातचीत का तरीका ही बदल गया था। वह किसी से सीधे मुँह बात ही नहीं करता। जैसे ह्न शतरंज के खेल में जब प्यादा, प्यादे से वजीर बन जाता है तो उसकी चाल टेढ़ी हो जाती है, उसीतरह जिनुआ से जिनचन्द्र बनते ही मानो उसके पंख लग गये थे और आकाश में उड़ने लगा था।

वह बिचारा यह नहीं जानता था कि – यह सब तो पुण्य–पाप का खेल है। रोड पर पैदल रास्ता नापनेवालों को करोड़पति बनकर कार में दौड़ने में यदि देर नहीं लगती तो करोड़पति से पुन: रोड पर आ जाने में भी देर नहीं लगती। शास्त्र इस बात के साक्षी हैं, शास्त्रों में लिखा है कि जो जीव एक क्षण पहले तक स्वर्गों के सुख भोगता है, सहस्त्रों देवांगनाओं सहित नन्दनवन के सैर–सपाटे करता हुआ आनन्दित होता है, वही अगले क्षण आयु पूरी होने पर ह्न **तंहतैं चय थावर तन धरै** ह्न इस आगम प्रमाण के अनुसार एक क्षण में एक इन्द्रिय जीव की योनि में चला जाता है। जो अभी चक्रवर्ती के भोगों के सुख भोग रहा है, वही मरकर सातवें नरक में भी जा सकता है।

अत: यदि कोई थोड़ा भी समझदार हो, विवेकी हो तो वह क्षणिक संयोग में अपनी औकात (वर्तमान हैसियत) को नहीं भूलता। अपनी वर्तमान पर्याय की कमजोरी और त्रिकालीस्वभाव की सामर्थ्य ह्न दोनों को भलीभाँति जानता है। अत: उसे सेठ जिनचन्द्र की भाँति संयोगों में अभिमान नहीं होता; परन्तु ऐसी समझ सेठ जिनचन्द्र में नहीं थी। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल साधना चैनल पर : दर्शकों के विचार

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के साधना चैनल पर प्रसारित हो रहे प्रवचनों का लाभ प्रतिदिन प्रात: हजारों लोग ले रहे हैं, इस सम्बन्ध में अनेकों पत्र हमारे पास प्राप्त हो रहे हैं।

जोरावर नगर (गुजरात) मुमुक्षु मण्डल के प्रमुख श्री ललितभाई सेठ लिखते हैं कि ह्न

''साधना चैनल पर रोज प्रात: ६.४५ बजे पण्डित हुकमचन्दजी भारिल्ल का प्रवचन सुनते हैं तो दिल प्रसन्न हो जाता है। प्रत्येक विषय की नवीनतम व्याख्या सुनने को मिलती है। वे जिस भी विषय पर चर्चा करते हैं तथा उसके स्पष्टीकरण के लिये जो रेफ्रेंस देते हैं, वो इतना परफैक्ट होता है कि विषय के अनुरूप होकर उसकी पूर्ति बन जाता है। सचमुच यह अद्भुत बात है, इसके लिये प्रखरबुद्धि और जबरदस्त अभ्यास चाहिये तभी यह मुमकिन है।

लगता है पण्डित हुकमचन्दजी के दिलो–दिमाग पर सरस्वती विराजमान है, उनका कोई अद्भुत ही क्षयोपशम है।

मैं इतना ही कहूँगा कि जैसे परमाणु के दो भाग नहीं हो सकते ठीक वैसे ही पण्डितजी द्वारा कहे गये या लिखे गये विषयों में कोई बात शेष बच ही नहीं सकती। हम सबका परम सौभाग्य है कि हमारे बीच ऐसी जबरदस्त प्रतिभा है जो निरन्तर समाज को अद्भुत विषय प्रदान कर रही है। इसके लिये उनको बहुत–बहुत धन्यवाद !

डॉ. भारिल्ल तो इस युग का अचम्भा है।

जयपुर ट्रस्ट (पं. टोडरमल स्मारक ट्रस्ट) पण्डितजी की बराबर सेवायें ले रहा है, यह बहुत अच्छी बात है। वहाँ से पण्डितजी के प्रवचनों की सी.डी., वी.सी.डी., पुस्तकें लगातार प्रकाशित हो रही है, जो भावी पीढी के लिये अत्यन्त उपयोगी बन जायेगी, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

पण्डित टोडरमलजी ने जो ज्योत जलाई थी, उसको पूज्य गुरुदेवश्री ने समझाया तथा पण्डित हुकमचन्दजी ने इतना दैदिप्यमान किया है कि दसों दिशा अत्यन्त प्रकाशमान हो चुकी है।

ऐसी प्रतिभा के लिये बारंबार साधुवाद !''

मेधावी छात्रों को स्वर्णिम अवसर

अलीगढ़ स्थित तीर्थधाम मंगलायतन में आत्मार्थी छात्रों को नैतिक, धार्मिक, आध्यात्मिक व लौकिक शिक्षा प्रदान करने के पावन उद्देश्य से भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन का शुभारम्भ विगत २ वर्षों से किया जा रहा है; जिसमें अभी ६२ छात्र अध्ययन रत हैं।

यहाँ कक्षा ९ से उन छात्रों को प्रवेश दिया जायेगा जो (१) जैनधर्म के मूल सिद्धान्तों में दृढ श्रद्धा रखते हों (२) जैन शास्त्रों के अध्ययन-अध्यापन में रुचि रखते हों (३) आठवीं कक्षा में न्यूनतम ६० प्रतिशत अंक प्राप्त किये हों (४) दृढ़ प्रतिज्ञ होकर विद्यालय की चर्या एवं नियमों का पालन कर सकें।

चयनित छात्रों में हिन्दी माध्यम के छात्रों को के.एल. जैन इन्टर कॉलेज, सासनी तथा अंग्रेजी माध्यम के छात्रों को दिल्ली पब्लिक स्कूल, अलीगढ़ में योग्यतानुसार प्रवेश दिया जायेगा। छात्र स्नातक व स्नातकोत्तर स्तर पर तकनीकी एवं व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिये महाविद्यालय में योग्यतानुसार प्रवेश प्राप्त कर सकेंगे।

प्रवेश के इच्छुक छात्र हमारे कार्यालय में पत्र लिखकर आवेदन पत्र मंगा लेवें, आवेदन पत्र जमा कराने की अन्तिम तिथि २५ फरवरी, ०५ है।

सम्पर्क-सूत्र :- पवन जैन/ अशोक लुहाड़िया,
भगवान श्री आदिनाथ विद्यानिकेतन, तीर्थधाम मंगलायतन,
अलीगढ़-आगरा मार्ग, सासनी-२०४२१६ (उ.प्र.)
फोन - (०५७१) २२२३३९१

रत्नत्रय विधान सानन्द सम्पन्न

ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ श्री नेमीनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की चतुर्थ वर्षगांठ पर श्री दि. जैन स्वाध्याय मण्डल एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में श्री सीमन्धर जिनालय, नजाई बाजार में १२ से १४ जनवरी, २००५ तक रत्नत्रय मण्डल विधान एवं संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

आयोजन में पण्डित मांगीलालजी कोलारस के प्रात: सम्यग्दर्शन के स्वरूप तथा दोपहर एवं रात्रि में समयसार पर सारगर्भित प्रवचनों का लाभ मिला। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं बालकक्षा का आयोजन किया गया। रात्रि में वीतराग-विज्ञान पाठशाला के बालकों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित रवि जैन ने सम्पन्न कराये। ज्ञातव्य है कि विधान में प्राप्त दान राशि को प्रधानमंत्री सहायता कोष में सुनामी पीड़ितों की सहायतार्थ भेजा गया। **- अनुराग जैन**

हार्दिक बधाई !

जयपुर : श्रीमती चाँदबाई सेठी पारमार्थिक ट्रस्ट के सौजन्य से श्री दिगम्बर जैन महासमिति राजस्थान अंचल द्वारा आयोजित **आतंकवाद की समाप्ति अहिंसा से ही संभव** विषय पर राज्यस्तरीय निबन्ध प्रतियोगिता में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के छात्र संभव जैन नैनधरा ने प्रथमस्थान, भरत अलगौंडर ने तृतीयस्थान एवं रविन्द्र काले ने सांत्वना पुरस्कार प्राप्त किया; एतदर्थ इन छात्रों को हार्दिक बधाई !

- प्रबन्ध सम्पादक

जैन बन्धुओं के लिये स्वर्णिम अवसर -

कोटा में 'मंगलधाम' का निर्माण

(विभिन्न साइजों के प्लॉट उपलब्ध)

कोटा शहर में निर्माणाधीन 'चैतन्यधाम' (जिनमंदिर एवं वृद्धाश्रम) से 400 मीटर पहले, केशवराय पाटन रोड पर जैन बन्धुओं के लिये 'मंगलधाम' के नाम से विभिन्न साइज के प्लॉट उपलब्ध हैं।

आत्मार्थी बन्धु यहाँ प्लॉट खरीदकर जिनमंदिर का लाभ उठा सकते हैं। ध्यान रहें प्लॉट सीमित ही हैं।

इस सम्बन्ध में प्लॉट खरीदने आदि की अधिक जानकारी के लिये श्री शोभित काला से मोबाईल नं. 09414071849 या 09829124755 पर सम्पर्क करें।

तत्त्वचर्चा

प्रवचनसार का सार 21

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे ....)

पाँच वर्ष तक श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय में जैन तत्त्वज्ञान का गहराई से अध्ययन करें; फिर तत्त्व से विमुख हो जाय, ऐसे छात्र की शिकायत जब समाज करती है तो हम कहते हैं जिस छात्र को पाँच वर्ष तक समझाने से समझ में नहीं आया; वह अब पाँच मिनट के समझाने से कैसे समझेगा ?

उस शिष्य को 'अध्यापकों को नमस्कार करना चाहिए' ह्न यह बात समझाकर अपने ही समय को व्यर्थ नष्ट करना है। विद्यार्थी को अध्यापकों को नमस्कार करना चाहिए ह्न यह समझाने के लिए भी क्या महाविद्यालय खोला जाता है या प्रवचनसार जैसे शास्त्र की गाथाओं का अर्थ समझाने के लिए महाविद्यालय खोला जाता है। जिस महाविद्यालय में गुरुजनों को नमस्कार करना चाहिए ह्न यह समझाना पड़े, यह उस महाविद्यालय का दुर्भाग्य ही है। यदि शिष्य गुरु के पास आता है तो गुरु ऐसा तत्त्व समझाए कि सहज ही शिष्य का विनम्र भाव से मस्तक झुक जाए।

आप हमें नमस्कार ही नहीं करते, आप मुनियों के विरोधी हो; प्रारम्भ से यहीं समझाने लगे। भाई ! यह समझाना कोई समझाना नहीं है। नमस्काररूप क्रिया तो अन्तर्निहित महिमा से ही प्रगट होती है। इसमें अधिक प्रलाप से क्या लाभ है ? आचार्य कहते हैं कि अब पूर्ण शक्ति से मोह के नाश करने का उद्यम करो।

अब शिष्य आचार्य से पूछता है कि - 'महाराज कोई दूसरा रास्ता है ?' तब आचार्य लिखते हैं कि ह्न **'अथ मोहक्षपणोपायान्तर-मालोचयति। ह्न** अब मोह के नाश के उपायान्तर की आलोचना करते हैं।'

आचार्य ने पूर्व में तो यह कहा था कि कोई दूसरा रास्ता नहीं है और यहाँ वे स्वयं ही दूसरा रास्ता बता रहे हैं। वस्तुत: यह दूसरा रास्ता नहीं है; उसी का सहयोगी रास्ता है।

आप किसी को यह बताते हैं कि भाईसाहब! यह विद्यालय बहुत अच्छा है; इसमें पाँच वर्षतक रहकर आप पढ़ेंगे तो इससे आपको बहुत लाभ होगा। अब वह कहता है कि भाईसाहब! यह तो मैंने निश्चित कर लिया है; लेकिन कोई दूसरा उपाय बताओ। 'अरे ! जब तुमने यह निश्चित किया है कि इसमें भर्ती होना है तो अन्य किसी उपाय कि क्या आवश्यकता है ?'

'भाईसाहब, हमें इस महाविद्यालय में प्रवेश कैसे मिलेगा ? इसका उपाय बताओ। अब तो इसप्रकार का प्रश्न करना चाहिए। इसप्रकार जो प्रथम उपाय का सहयोगी उपाय हो; उसे ही उपायान्तर कहा जाता है अर्थात् यह उपाय का उपाय और मार्ग का मार्ग है।'

अब मोहक्षय करने का उपायान्तर विचारते हैं -

जिणसत्थादो अट्ठे पच्चक्खादीहिं, बुज्झदो णियमा।
खीयदि मोहोवचयो, तम्हा सत्थं समधिदव्वं ।।८६।।

(हरिगीत)

तत्त्वार्थ को जो जानते प्रत्यक्ष या जिनशास्त्र से।
दृगमोह क्षय हो इसलिए स्वाध्याय करना चाहिए।।८६।।

जिनशास्त्र द्वारा प्रत्यक्षादि प्रमाणों से पदार्थों को जाननेवाले के नियम से मोहोपचय क्षय हो जाता है; इसलिए शास्त्र का सम्यक् प्रकार से अध्ययन करना चाहिए।

आचार्य यहाँ उपायान्तर बता रहे हैं। वैसे १२ व १३ गाथा से ही आचार्य ने उपाय बताना प्रारम्भ कर दिया था; परन्तु ८०वीं गाथा में आचार्य ने इस उपाय की घोषणा की थी कि जो अरहंत को द्रव्य-गुण-पर्याय से जाने, वह आत्मा को जानता है एवं उसका मोह नाश को प्राप्त होता है। वहाँ मात्र द्रव्य-गुण-पर्याय से जाने ह्न ऐसा ही कहा था; उन द्रव्य-गुण-पर्याय को जानने का उपाय नहीं बताया था। अब यहाँ आचार्य उन द्रव्य-गुण-पर्याय को जानने का उपाय बता रहे हैं।

द्रव्य-गुण-पर्याय को शास्त्र के सम्यक् अध्ययन से अर्थात् स्वाध्याय से जानो ह्न यहाँ यही उपायान्तर बताया है। इसप्रकार यहाँ अरहंत को द्रव्य-गुण-पर्याय से जानो ह्न इसका उपसंहार भी किया है और ज्ञेयतत्त्व-प्रज्ञापन अधिकार की भूमिका भी बाँध रहे हैं। यहाँ आचार्य शास्त्रों से द्रव्य-गुण-पर्याय को जानने की प्रेरणा दे रहे हैं।

आचार्यदेव ने इस ग्रन्थ के ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार में द्रव्य-गुण-पर्याय की सामान्य एवं विशेषरूप से चर्चा की। जब यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि अरहंत के द्रव्य-गुण-पर्याय को कैसे जाने? तब आचार्यदेव ने शास्त्रों का स्वाध्याय करना चाहिए - ऐसा कहा। इसप्रकार यहाँ उपायान्तर से आशय किसी विरुद्ध उपाय से नहीं है।

जब मैं प्रशिक्षण शिविर में जाता हूँ तो वहाँ एक विशेष बात समझाता हूँ कि भाईसाहब! हम आपके प्रतिद्वंद्वी नहीं है। जैसे दो मेडिकल कॉलेज हैं, वहाँ कोई ऐसा कहे कि यह मेरा प्रतिद्वंद्वी है। दोनों महा-विद्यालय में से किन छात्रों को नौकरी मिली ह्न इसमें वे दोनों प्रतिद्वंद्वी हो सकते हैं; लेकिन उन महाविद्यालयों में प्रवेश पाने तक जो पहली कक्षा से लेकर बारहवीं कक्षा तक की पढ़ाई कराते हैं; वे तो उनके सहयोगी ही हैं; क्योंकि यदि वे नहीं पढ़ायेंगे तो मेडीकल कॉलेज को छात्र कहाँ से मिलेंगे ?

हम भी इस विद्यालय में आपके लिए कच्चा माल तैयार कर रहे हैं। मुनि बनने से पूर्व जिनशास्त्रों का अध्ययन होना जरूरी है; विद्वान होना जरूरी है, वह हम तैयार कर रहे हैं। हमने मुनि बनाने के लिए कच्चा माल तैयार किया है, यदि आप मुनि हैं तो आप इन्हें भी मुनि बना लो। हम सदाचारी विद्वान तैयार कर रहे हैं।

सदाचारी शाकाहारी समाज हो, गाँव-गाँव में पाठशाला चले, गाँव-गाँव में बालक णमोकार मंत्र सीखें ह्न इसमें किसी की भी प्रतिद्वंद्वता नहीं है; क्योंकि यह तो धर्मप्रचार के लिए पूर्व भूमिका है।

इसीप्रकार आचार्य यहाँ कह रहे हैं कि हम जिस उपायान्तर की चर्चा कर रहे हैं, वह उपाय ८० वीं गाथा के उपाय के विरुद्ध नहीं है; अपितु उसका सहयोगी उपाय है।

उपाय यह है कि द्रव्य-गुण-पर्याय से अरहंत को जानना और उपायान्तर यह है कि इन द्रव्य-गुण-पर्यायों को विविध शास्त्रों के स्वाध्याय से जानना चाहिए; क्योंकि एक ही जगह सभी विषय विस्तार से नहीं कहे जा सकते।

आचार्यदेव ने हमें उपाय बता दिया है; अब हमें उस उपाय को जानना है तो शास्त्रों का स्वाध्याय करके जानना चाहिए।

यदि कोई तुम्हें समझाता है; पर उसमें सही अर्थ भासित न होकर अनर्थ भासित होता है तो शास्त्र तुम्हारे पास साक्षी हैं; किसी और से पूछने की आवश्यकता ही नही है।

इसप्रकार यहाँ आचार्यदेव ने उसी उपाय के सहयोगी उपाय को उपायान्तर कहा है।

णाणप्पगमप्पाणं परं च दव्वत्तणाहिसंबद्धं।
जाणदि जदि णिच्छयदो जो सो मोहक्खयं कुणदि।।८९।।

(हरिगीत)

जो जानता ज्ञानात्मक निजरूप अर परद्रव्य को।
वह नियम से ही क्षय करे दृगमोह एवं क्षोभ को।।८९।।

जो निश्चय से ज्ञानात्मक ह्न ऐसे अपने को और पर को निज-निज द्रव्यत्व से संबद्ध जानता है, वह मोह का क्षय करता है।

८६वीं गाथा में आचार्यदेव ने ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार की भूमिका बाँधी थी और अब यहाँ ज्ञेय-ज्ञानविभागाधिकार की भूमिका बाँध रहे हैं। ऐसा कह रहे हैं कि शास्त्रों से द्रव्य-गुण-पर्याय को जानकर 'ज्ञान-स्वभावी आत्मा मैं हूँ और अन्य सम्पूर्ण जगतरूप अन्य द्रव्य मैं नहीं हूँ' ह्न ऐसा जानना ही मोह के क्षय का उपाय है। आचार्य ने द्रव्य-गुण-पर्याय को जानकर उसमें स्व-पर भेदविभाग करने का आदेश दिया है। इसप्रकार जानने का लाभ यह है कि जो मैं हूँ, उसमें जम जाना है।

अब सब प्रकार से स्व-पर के विवेक की सिद्धि आगम से करने योग्य है ह्न ऐसा उपसंहार करते हैं ह्न

तम्हा जिणमग्गादो गुणेहिं आदं परं च दव्वेसु।
अभिगच्छदु णिम्मोहं इच्छदि जदि अप्पणो अप्पा।।९०।।

(हरिगीत)

निर्मोह होना चाहते तो गुणों की पहिचान से।
तुम भेद जानो स्व-पर में जिनमार्ग के आधार से।।९०।।

यदि आत्मा अपनी निर्मोहता चाहता हो तो जिनमार्ग से गुणों के द्वारा द्रव्यों में स्व और पर को जानो। तात्पर्य यह है कि स्व-पर के विवेक से मोह का नाश किया जा सकता है; इसलिए जिनागम के द्वारा विशेष गुणों से ऐसा विवेक करो कि अनन्त द्रव्यों में से यह स्व है और यह पर है।

इस गाथा में महत्त्वपूर्ण बात यह है कि जिन शास्त्रों के स्वाध्याय से द्रव्य-गुण-पर्याय को जानकर गुणों के आधार पर स्व और पर का विभाग किया जा सके, स्व और पर का विभाग करके पर से अपनापन तोड़कर स्व में अपनापन जोड़ा जा सके; उन्हीं शास्त्रों का स्वाध्याय अभीष्ट है; क्योंकि मोहक्षय का यही उपाय है; अन्य बातों में उलझना ठीक नहीं है।

९१वीं गाथा की यह टीका महत्त्वपूर्ण है ह्न

''सादृश्यास्तित्व से समानता को धारण करते हुए भी स्वरूपास्तित्व से विशेषता से युक्त द्रव्यों को स्व-पर के भेदविज्ञानपूर्वक न जानता हुआ, न श्रद्धा करता हुआ जो जीव मात्र श्रमणता (द्रव्यमुनित्व) से आत्मा का दमन करता है; वह वास्तव में श्रमण नहीं है।

जिसे रेत और स्वर्णकणों का अन्तर ज्ञात नहीं है, उस धूल को धोनेवाले पुरुष को जिसप्रकार स्वर्णलाभ नहीं होता; उसीप्रकार उक्त श्रमणाभासों में से निरुपराग आत्मतत्त्व की उपलब्धि लक्षणवाले धर्म का उद्भव नहीं होता, धर्मलाभ प्राप्त नहीं होता।''

सभी द्रव्य सत् हैं ह्न ऐसी जो महासत्ता है, वही सादृश्यास्तित्व है। इसमें भेदज्ञान नहीं हो पाता है। सादृश्यास्तित्व में से ही स्वरूपास्तित्त्व प्रगट होता है। 'मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ' - यह मेरा स्वरूपास्तित्त्व है और 'आप ज्ञानानन्दस्वभावी हैं' - यह आपका स्वरूपास्तित्व है।

लेकिन मेरा अस्तित्व मेरे में है, पर से उसका कोई संबंध नहीं। जिसे इस स्वरूपास्तित्व का पता नहीं है, वह कितने ही शास्त्र पढ़े, मुनिपना धारण करें, उसका जीवन व्यर्थ ही है।

जिसप्रकार सर्राफा बाजार में दुकानों के पास नालियाँ होती हैं तो बहुत सारे स्वर्णकण उन नालियों में, धूल में गिर जाते थे और धूलधोया लोग नाली में से कीचड़, धूल-मिट्टी इकट्ठा करके कीचड़ एवं धूल को धो-धोकर उसमें से स्वर्णकण निकालते हैं। उस नाली में, धूल में इतने स्वर्णकण गिर जाते हैं कि उससे ही उन धूलधोया लोगों की आजीविका चलती है।

आचार्य कहते हैं कि जो धूलधोया का धंधा करे और उसे यदि स्वर्णकण कौन-सा है, मिट्टी कौन-सी है एवं कंकड़ पत्थर कौन-से हैं ? इसका ज्ञान नहीं हो तो उसे स्वर्णकण कैसे मिलेंगे ? उसकी निगाह में वे स्वर्णकण आयेंगे; लेकिन उन्हें वह पहचान नहीं पाएगा। ऐसे लोग स्वर्णकणों की प्राप्ति के अभाव में भूखें ही मरेंगे।

उसीप्रकार भरपूर स्वाध्याय करके भी , जिसने स्व-पर का भेदविज्ञान नहीं किया है, उनका जीवन धूलधोये की भाँति ही निष्फल जाएगा। इस कथन का आशय यह है कि आगम से द्रव्य-गुण-पर्याय का स्वरूप जानकर उसमें से स्वत्व निकालना आना चाहिए। **(क्रमशः)**

यही सारभूत है

जीवोऽन्यः पुद्गलाश्चान्य इत्यसौ तत्त्वसंग्रहः ।
यदन्यदुच्यते किञ्चित्सोऽस्तु तस्यैव विस्तरः।।
जीव जुदा पुद्गल जुदा, यही तत्त्व को सार।
बाकी जो व्याख्यान है, याही को विस्तार।।

जीव और पुद्गल भिन्न-भिन्न हैं, इतना ही तत्त्व का सार है, इसके अलावा जो कुछ भी कहा जाता है, वह इसका ही विस्तार है।

जीव शरीरादि से भिन्न है और शरीरादि जीव से भिन्न है, इतना ही कथन करना, आत्मतत्त्व का भूतार्थ का संग्रह है अर्थात् सम्पूर्णरूप से उसका निर्णय है। इस तत्त्व संग्रह के अतिरिक्त जो कुछ भेद-प्रभेद आदि हैं, वे विस्तार रुचिवाले शिष्यों की अपेक्षा से आचार्यों ने जो कहा है उसका ही विस्तार है। हम उसका भी अभिनन्दन करते हैं ह्न ऐसा भाव है। **ह्न इष्टोपदेश, श्लोक 50 व टीका**

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

(पृष्ठ 1 का शेष ...)

प्रकाशन की रूपरेखा एवं श्री पीयूष जैन ने ग्रन्थ का परिचय दिया। श्री अशोक परनामी द्वारा भेंट की गई प्रशस्ति का वाचन श्री मिलापचन्द डंडिया ने किया।

महाविद्यालय के प्राचार्यत्व की रजत जयन्ती के अवसर पर महाविद्यालय के छात्रों ने भी रजत प्रशस्ति-पत्र भेंटकर कृतज्ञता ज्ञापित की।

समारोह के अन्त में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने आत्मसंबोधनार्थ स्वरचित कविता का वाचनकर अपने भाव व्यक्त किये। उनके वक्तव्य के पश्चात् श्री दिग. जैन महासमिति, श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई, राजस्थान जैन सभा, कुन्दकुन्द परमागम ट्रस्ट सोनागिरि, भारतवर्षीय दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राजस्थान अंचल, अखिल भारतीय तारण-तरण शोध संस्थान, अ.भा. पद्मावती पोरवाल समाज, जैन संस्कृति रक्षा मंच, श्री दि. जैन डॉक्टर्स फोरम, तीर्थधाम मंगलायतन अलीगढ़, आत्मार्थी ट्रस्ट दिल्ली, सिद्धायतन द्रोणगिरि, मुमुक्षु आश्रम कोटा आदि लगभग 70 राष्ट्रीय, प्रादेशिक, स्थानीय संस्थाओं तथा देश-विदेश के विभिन्न नगरों एवं मण्डलों से पधारे ख्यातिप्राप्त गणमान्य प्रतिनिधियों द्वारा पण्डितजी का माल्यार्पण, शाल एवं स्मृति चिन्ह आदि भेंटकर स्वागत किया गया।

समारोह का मंगलाचरण श्रीमान निहालचन्दजी अजमेरा भीलवाड़ा तथा संचालन एडवोकेट श्री अनूपकुमार जैन फिरोजाबाद ने किया।

प्रात:काल श्री टोडरमल स्मारक भवन में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार पर मार्मिक उद्बोधन के उपरान्त **मेरी दृष्टि में बड़े दादा** विषय पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता जैन प्रचारक के सम्पादक डॉ. सुरेशचन्दजी जैन दिल्ली ने की। विशिष्ट अतिथि श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी एवं मुख्य अतिथि श्री महीपाल जैन बांसवाड़ा थे। गोष्ठी में वर्तमान एवं भूतपूर्व स्नातकों में पण्डित अभिषेक जैन सिलवानी, पण्डित सौरभकुमार जैन फिरोजाबाद, डॉ. अनेकान्त जैन दिल्ली, डॉ. महावीरप्रसाद जैन उदयपुर, पण्डित मुकेश शास्त्री विदिशा, पण्डित राकेश शास्त्री अलीगढ़, पण्डित राजकुमार शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित प्रदीपकुमार झांझरी उज्जैन के अतिरिक्त पारिवारिक सदस्यों में श्री अनेकान्त भारिल्ल, श्री परमात्मप्रकाश भारिल्ल, डॉ. उत्तमचन्द भारिल्ल एवं डॉ. सत्यप्रकाश जैन दिल्ली ने अपने संस्मरण एवं हृदयोद्गार व्यक्त किये।

सभा का संचालन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने किया।

दोपहर के सत्र में स्मारक भवन में **बीसवीं सदी की विद्वत् परम्परा में श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय का योगदान** विषय पर विद्वत् गोष्ठी आयोजित की गई; जिसकी अध्यक्षता डॉ. उदयचन्दजी उदयपुर ने की। इस अवसर पर श्री अशोक बड़जात्या, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल, पण्डित रतनचन्द भारिल्ल एवं श्री भागचन्द कोठारी मंचासीन थे।

इस अवसर पर डॉ. सत्यप्रकाश शास्त्री दिल्ली, डॉ. पी.सी. जैन, श्री बुद्धिप्रकाशजी भास्कर, डॉ. प्रेमचन्दजी रांवका, डॉ. मानमलजी कोटा, डॉ. सुरेशचन्दजी दिल्ली, डॉ. उदयचन्द जैन उदयपुर, डॉ. बी.एल. सेठी, पण्डित शांतिकुमार पाटील एवं डॉ. श्रीयांसकुमार सिंघई जयपुर आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। सभा का संचालन श्री अखिल बंसल ने किया।

– अशोक बड़जात्या, अध्यक्ष, अभिनन्दन समारोह समिति

विद्वत् सम्मेलन एवं संगोष्ठी सम्पन्न

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ दिनांक २९ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर, २००४ तक श्री महावीर परमागम मंदिर ट्रस्ट द्वारा त्रि-दिवसीय विद्वत् सम्मेलन एवं गोष्ठी का आयोजन किया गया।

इस विद्वत् सम्मेलन में समाज के अनेक मूर्धन्य विद्वान एवं विशिष्ट प्रतिनिधि सम्मिलित हुये। गोष्ठी में ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, डॉ. अरविन्दजी करहल, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, डॉ. वीरसागरजी दिल्ली, पण्डित राकेशकुमारजी अलीगढ़, डॉ. योगेशचन्दजी अलीगंज, पण्डित कमलेशकुमारजी मौ एवं पण्डित सुनीलकुमारजी शिवपुरी आदि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ समाज को प्राप्त हुआ।

गोष्ठी का मुख्य विषय '**विद्वानों द्वारा समाज में तत्त्व की निर्दोष प्रभावना कैसे हो ?**' तथा '**वर्तमान में बाल शिक्षण-शिविरों की भाँति प्रौढ शिविरों की भी महती आवश्यकता है**' रखा गया। इन विषयों पर विद्वानों ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

इस सम्पूर्ण आयोजन की व्यवस्था तथा संचालन में स्थानीय मुमुक्षु समाज एवं अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन शाखा भिण्ड का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। सम्पूर्ण कार्यक्रम का सफल संचालन पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरावालों ने किया।

इस सम्मेलन में बाल ब्र. रवीन्द्रजी का भी पावन सान्निध्य एवं मंगलमय मार्गदर्शन प्राप्त हुआ। **– महेन्द्रकुमार शास्त्री**

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

07 से 13 फर.05	**दिल्ली**	**पंचकल्याणक प्रतिष्ठा**
21 से 23 फर.05	**जयपुर**	**विश्वविद्यालय सेमिनार**
08 से 12 मई 05	**भायंदर-मुम्बई**	**पंचकल्याणक प्रतिष्ठा**
13 से 30 मई 05	**कोल्हापुर**	**प्रशिक्षण-शिविर**
02 जून से 25 जुलाई	**विदेश***	**धर्म प्रचारार्थ**
31 जुलाई से 9 अगस्त	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**

* विदेश कार्यक्रम आगामी अंक में विस्तार से प्रकाशित किया जायेगा।

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) फरवरी (द्वितीय) 2005
J. P.C. 3779/02/2003-05

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पं. संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए. जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन तथा इतिहास एवं **पं. जितेन्द्र वि.राठी,** शास्त्री
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127